गुप्तों का सामाजिक जीवन

- 24th lecture by

Mamta Rani
History depart.
SNSRKS COLLEGE
SAHARSA

25-04-2020

Scanned with CamScanner

गुप्तों का सामाजिक जीवन :-

24th Lecture.

→ गुप्तकालीन समाज परम्परागत चार वर्णों में विभक्त था। समाज में ब्राह्मणों का स्थान सर्वोच्च था। उनके छः कर्त्तव्य माने जाते थे- अध्ययन, अध्यापन, यज्ञ करना, दान ~~करना~~ देना एवं दानलेना।

→ चार वर्णों का आधार गुण और कर्म न होकर जन्म था। गुप्तकालीन समाज में वर्णभेद स्पष्ट रूप से था।

→ न्याय संहिताओं में कहा गया है कि ब्राह्मण की परीक्षा तुला से, क्षत्रियों की अग्नि से, वैश्य की जल से तथा शूद्र की विष से की जानी चाहिए। इस काल की वर्ण व्यवस्था की विशेषता यह थी कि अब शूद्र सैनिक वृत्ति को अपनाने लगे थे।

→ याज्ञवल्क्य शूद्रों को व्यापारी, कारीगर तथा कृषक होने की अनुमति देते। ह्वेनसांग ने शूद्रों को खेतिहर वर्ग के रूप में उल्लेख किया है इस काल में शूद्रों की आर्थिक दशा में सुधार हुआ।

→ गुप्त काल में प्राप्त ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों को नारद स्मृति में गिनाया गया है। इस काल में शूद्रों की स्थिति में सुधार हुआ अब उन्हें रामायण, महाभारत और पुराण सुनने का अधिकार मिल गया। वे अब कर्ण नामक एक नए देवता की पूजा भी कर सकते थे। सातवीं से शूद्रों की पहचान मूलतः कृषक के रूप में होने लगी।

→ चाण्डाल को चारों वर्णों में नीचा स्थान प्राप्त था। फाहियान ने लिखा है कि चाण्डाल गांव के बाहर बसते थे और मांस खाते थे।

Scanned with CamScanner

गुप्तकाल के धर्मशास्त्रों में स्पष्ट रूप से शूद्रों को अस्पृश्यों और दासों से अलग बताया गया है।

→ गुप्तकाल में वर्ण परिवर्तन करने की अनुमति थी। बहुसंख्यक ब्राह्मण इस काल में वाणिज्य व्यापार करते थे। स्मृति ग्रंथों में इस वृत्ति को आपद्धर्म कहा गया है। इस काल में वाणिज्य को भी शूद्रों का कर्तव्य माना जाने लगा था।

→ वैश्य वर्ण के कर्म कृषि और व्यवसाय थे। गुप्त काल में उन्हें वणिक श्रेष्ठी और सार्थवाह भी कहा गया था। गुप्तकालीन अभिलेखों में कायस्थ जाति का उल्लेख मिलता है। ओशनस स्मृति में कायस्थ का एक जाति के रूप में उल्लेख मिलता है।

→ यह भी कहा गया है कि भूमि और भू-राजस्व के हस्तान्तरण के कारण कायस्थ जाति का जन्म हुआ। कायस्थों का सर्वप्रथम उल्लेख याज्ञवल्क्य ने किया है। उनका प्रधान कार्य केवल लेखकीय ही नहीं होता था बल्कि वे लेखाकरण, गणना, आय-व्यय और भूमिकर के अधिकारी भी होते थे।

→ गुप्तकालीन अभिलेखों में उन्हें प्रथम कायस्थ या ज्येष्ठ कायस्थ कहा गया है। गुप्तकाल तक कायस्थ केवल एक वर्ग के रूप में थे जो बाद में चलकर एक जाति के अन्तर्गत आ गये। इस काल की स्मृतियों में उनका उल्लेख जाति के रूप में नहीं मिलता है।

—: स्त्रियों की दशा :—

→ गुप्तकालीन साहित्य एवं कला में नारी का आदर्शमय चित्रण है परंतु व्यावहारिक रूप में उनकी स्थिति पहले की अपेक्षा दयनीय हो गई थी। समाज में बहुपत्नी, पर्दा प्रथा, और बाल विवाह प्रथा नहीं थी।

Scanned with CamScanner

→ स्त्री शिक्षा का प्रचलन था। अमरकोष में शिक्षिकाओं के लिए उपाध्याय, उपाध्यायीय और आचार्या शब्द आये हैं। इस काल मे सती प्रथा विशेषत: सैनिक जातियो में विद्यमान था।

→ सतीप्रथा का सर्वप्रथम ~~उल्~~ अभिलेखीय प्रमाण एरण अभिलेख मे गोपराज नामक सेनापति की स्त्री के सती होने का उल्लेख मिलता है। स्त्रियों के सम्पत्ति संबन्धी अधिकारों के विषय में याज्ञवल्क्य स्मृति में निरूपित मान्यताएं महत्वपूर्ण हैं। उन्होने पत्नी को भी पति के सम्पत्ति का अधिकारी बताया है।

→ इस काल में विधवाओं की स्थिति अत्यंत शोचनीय थी। देवदासियों की प्रथा का भी उल्लेख मेघदूत तथा पुराणों मे मिलता है। नारद एवं पराशर स्मृति से विधवा विवाह का समर्थन मिलता है।

=*=

Scanned with CamScanner